11–7–67रात्रीक्लास– बच्चे अथवा बच्चियां। बाप तो कहेंगे बच्चे और यह अलौकिक बाप कहेंगे बच्चे अथवा बच्चियां। छोटे2 बच्चे भी समझते हैं कि भगवान पढ़ाते हैं। कहां तो भगवान पढ़ावे,कहां पर यह मनुष्य। बाप ने समझाया है कि देवी देवताओं को मनुष्य नहीं कहेंगे। कई तो भगवान–भगवती भी कहते हैं ;परंतु वो तो है देवी–देवता। उनको श्रेष्ठ बनाने वाला उंच ते उंच भगवान निराकार है। ऐसे नहीं कि किसी देवता ने इनको बनाया है। नहीं। भगवानोवाच्य है। देवी–देवतावाच्य नहीं है। यह सभी नई दुनियां के लिए नई बातें ,नई ही पढ़ाई है। शास्त्रों में तो झूठी ही बातें लिख दी हें। इस समय अंतिम जन्म सांवरा है ना। बाप कहते हैं कि हम तुमको बिल्कुल ही प्योर देवता बनाते हैं। बच्चे भी जानते हैं कि यहां पर भगवान पढ़ाते हैं विश्व का मालिक बनाने लिए। वहां पर शैतान पढ़ाते हैं। अब बाप पूछते हैं कि विश्व का महाराजा–महारानी बनना अच्छा वा वो जिस्मानी पढ़ाई अच्छी है?कहते हैं कि परीक्षा पास करके फिर इस पढ़ाई में लगेंगे। अरे, अगर मर जाओ तो?बुद्धि से काम लिया जाता है ना। समय बहुत थोड़ा है। मरने पहले पढ़ाई पढ़ना अच्छा है। योग से तुम बच्चों की आयु बड़ी होती है। आयु बड़ी होती है इस याद की यात्रा से। भविष्य में बड़ी आयु वाले तुम बनते हो। सतोप्रधान भारत था तो बड़ी आयु वाले थे। तुम जानते हो कि हम बड़ी आयु वाले बन रहे हैं। यह पढ़ाई शुरू कर देनी चाहिए। बेहद का बाप तो सिर्फ कहते हैं कि मुझे याद करो। इस पढ़ाइ का नशा चढ़ गया तो बहुत अच्छा है। जो2 अच्छी कुमारियां निकलेंगी उनको सर्विस में लगा देंगे। बाकी जो अच्छी नहीं होंगी तो रिश्तेदारों पास भेज देंगे। हर बात में सब कुछ सिखायेंगे। अंग्रेजी आदि भी सिखावेंगे। बच्चों में मोह की रग नहीं रहनी चाहिए। तुम बच्चे बाप की याद में रहते हुये इस दुनियां को भूल जाते हो। आग तो लगनी ही है ना। विनाश होना ही है। विनाश कौन करते हैं?शंकर काहे को किसी को मारते हैं। मारना तो पाप है ना। शंकर में क्रोध है?.....फिर उनको देवता कैसे कह सकते हैं?शिवबाबा शंकर द्वारा विनाश करवाते हैं।

11–7–67 3

यह ....रांग है। किसी को कहना कि मारो तो उस पर भी दोष आ जाता है। मैं ऐसा थोड़े ही कहूंगा कि मारो। बाबा कहते हैं कि प्रेरणा अर्थात् विचार। बाकी प्रेरणा आदि की तो बात ही नहीं रही, ना ही मैं कहता हूं कि मारो। यह तो ड्रामा बना ही हुआ है। आपस में भाई लड़ते रहते हैं। वो आसुरी मत है ना। अब तुम जानते हो कि वो आपस में लड़ते रहते हैं। माखन तुमको मिलता है। सारे विश्व का मालिक बनते हैं। बादशाही का माखन तुमको मिलता है। यह ड्रामा में ही नूंध है। ऐसा नहीं कि ईश्वर ही वो सब करते हैं। फिर जो भी अच्छा वा बुरा कर्म करता है वो भी ड्रामा में ही नूंध है। ना ही मैं जानी जाननहार हूँ। यह भी अंधविश्वास है। सन्यासियों में भी तो अंधविश्वास है ना। बिना विश्वास तो वास्तव में पढ़ भी नहीं सकते। विश्वास है तो ही पढ़ते हैं। बाप का वर्सा वो उतना ही पावेगा जितना जो पुरुषार्थ करेगा। पुरुषार्थ तुम बच्चों को बहुत2 करना है। उसमें भी मुख्य तो है याद की यात्रा। यह सर्विस ऑफ हेल्थ है। तुम परमात्मा प्रिय बनेंगे तो हैल्थ भी अच्छी हो जावेगी। बाप कहते हैं कि अब पार्ट पूरा होता है। घर जाकर फिर सुखधाम में आवेंगे। यह है दुःखधाम। सतयुग की महारानी बनना है (वो) मशीन की सिलाई और कपड़ों की सिलाई आदि करना है?बुद्धियोग लगाकर भल वो पढ़ाई आदि भी पढ़ो। (बाप)राय देते हैं कि कन्या अगर होशियार है तो सेंटर खोलो। चित्र सामने रख देते हैं। बहुत टॉपिक्स हैं जो बोर्ड पर लिख सकते हो। फिर आते ही रहेंगे। समय लिखना होता है फलाने से फलाने तक। मुख्य समय तो है सवेरे और शाम का। अपना दुकान आदि भी सम्भालना है। कोई आवे ,दिन में भी सर्विस करनी पड़े। सोना नहीं है। गवर्मेंट के सर्वेंट सोते नहीं हैं। कमाई होती है ना। तुम भी कमाई करते हो। जागते रहोगे तो .....आदि भी आवेंगी। तुम्हारे लिए जागना जरूरी है। जिन जागा तिन पाया जिन सोया तिन खोया। तुम बच्चों की तो सारा दिन ही सर्विस है। कोई ब्राह्मणी यह भी कहती होगी कि दिन के समय में नहीं आओ ;क्योंकि ब्र.कु. सोती

हैं ना। वास्तव में सोना ठीक नहीं है। अभी जो रुहानी म्यूजियम का प्रबंध हो रहा है उसमें तो सोने की फुर्सत ही नहीं मिलेगी। आते ही रहेंगे। आगे चलकर इतनी सर्विस शुरू हो जावेगी जो कि नींद करने का समय ही नहीं मिलेगा। फिर आदत को मिटान लिए मेहनत करनी पड़ेगी। जिन सोया तिन खोया–यह गायन भी इस समय का ही है। तुमको सर्विस करनी है तो टॉपिक्स भी निकालनी चाहिए। बाप को बहुत प्रेम से याद करना है। बाबा को ऐसे भी नहीं है कि बैठकर ही याद करना है। घूमते,फिरते,पैदल करते भी याद में रहना है। काम करते दिल यार की तरफ ही रहे। याद में रहने से .....। याद ही बहुत मुख्य है। उसमें ही तुम ठंडे हो। आधा कल्प के पाप सिर पर हैं,जो कि काटने हैं। बाप कहते हैं कि काम महाशत्रु है। सम्पूर्ण बनना है। ओम।